माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 4 फरवरी, 2018 को पंचकुला में करूणा चेरिटेबल सोसायटी के वार्षिक उत्सव में दिया गया भाषण।

करूणा चेरिटेबल सोसायटी के प्रधान श्री जे0डी0 गुप्ता जी, महासचिव चन्द्र हर्ष गोयल जी, सोसायटी के अन्य पदाधिकारीगण, प्रशासनिक अधिकारीगण, पत्रकार साथियो और इतनी बड़ी संख्या में करूणा चैरिटेबल सोसाइटी के इस वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में उपस्थित सभी भाईयो और बहनो!

बहुत ही भावनात्मक कार्यक्रम है। मन को द्रवित करने वाला कार्यक्रम है। और जो कुछ आप कर रहे हैं उसको सुनकर उत्साहित करने वाला भी कार्यक्रम है। लेकिन अन्त में आपने कहा कि मैं दो शब्द कहूं। यह तो संभव नहीं है, क्योंकि मैं प्रोफेसर रहा हूं, चालीस मिनट बोलने की आदत है।

किसी भी कार्यक्रम के शुभारम्भ में दीप प्रज्ज्वलन होता है। लेकिन प्रारंभ से लेकर आखिर तक वे जलते नहीं रहते, बीच में बुझ जाते हैं। लेकिन इस कार्यक्रम में जो दीप जलाये गये थे वे अब तक जल रहे हैं। और यह सब करूणा चैरिटेबल सोसायटी के कारण है। ये सतत् दीप जलकर यह संदेश दे रहे हैं कि आप मानवमात्र की और समाज की सेवा इसी तरह करते रहें, इसी तरह प्रयास करते रहें।

बड़ा आदमी हम किसको कहें, श्रेष्ठ आदमी हम किसको कहें? जो अपने लिये जीता है, वह आदमी श्रेष्ठ नहीं होता है। क्योंकि अपने लिये तो जानवर भी जीता है। श्रेष्ठ आदमी वह होता है जो दूसरों के लिये जीता है और दूसरों को जीने के लिये जो अनुपात है, जो मात्रा है वह जितनी ज्यादा होगी उतना ही आदमी ज्यादा उत्तम और श्रेष्ठ होगा। हम सिर्फ जीने के लिये पैदा नहीं हुये हैं, हम दूसरों को जीने देने के लिये भी पैदा हुये हैं।

जरा विचार करो, जिनके पास सब कुछ है, जो सम्पन्न हैं, जिनके पास सम्पदाएं हैं, आर्थिक सामर्थ्य है, सारी सुविधायें हैं, वे किसके बल पर हैं? यह सब कुछ जो आपको मिला है, वह किसके बल पर मिला है, किसने दिया है आपको यह? यह सब भगवान ने दिया है। यह समाज भगवान का ही रूप है। इसलिये इसको जनता जनार्दन कहते हैं। यह समाज, यह जनता ही है। आपको इसी के बल पर मिला है। आप उद्योगपति का विचार करें, आप व्यापारी का विचार करें, आप प्राध्यापक का विचार करें, आप डाक्टर का विचार करें, आप वकील का विचार करें, आप राजनेता का विचार करें। जो बड़े–बड़े पदों पर पहुंचे किसी के बारे में भी आप विचार करें तो वे किसके बल पर बने? वे सब समाज के बल पर बने हैं। अगर समाज नहीं है तो फिर डाक्टर का क्या मतलब है? किसी वकील को कहो कि आप अपना ऑफिस शहर की बजाए किसी जंगल में खोल लो। अगर वह जंगल में जाकर ऑफिस खोलेगा तो उसके पास क्लाइंट नहीं आयेगा, मुवक्किल नहीं आयेगा, दहाड़ता हुआ शेर आयेगाा। और जब जंगल में ऑफिस में बैठे हुए वकील के सामने दहाड़ता हुआ शेर आयेगा तो वकील उसको कहेगा कि देख मुझे मारना मत, 302 में जायेगा। उसको 302 समझ में

आयेगा क्या? वह तो यह समझेगा कि ये खुद को तो मारना चाहता ही है 302 को और मारने को कह रहा है।

अतः बिना समाज के व्यक्ति कुछ भी नहीं। इसीलिये विनोबा भावे ने ठीक ही कहा था कि जो रखता है वह राक्षस है और जो देता है वह देवता है। राक्षस और देवता में यही तो फर्क है। जो अपने लिये जीता है, अपना ही उत्कर्ष चाहता है, अपना ही उत्थान चाहता है, वह तो दुर्योधन है, जो अपने भाईयों को कुछ भी नहीं देना चाहता था, एक इंच भूमि तक, 'सुई की नोक के बराबर भूमि तक नहीं दूंगा'। अगर कोई किसी को कुछ देना ही नहीं चाहता, जिसके बल पर बड़ा हुआ है, समाज के बल पर, उसके प्रति कोई चेतना नहीं, कोई करूणा नहीं, कोई प्रेम नहीं, कोई दया नहीं, हम उसको क्या कहें? दुर्योधन नहीं कहें उसको? और इसलिये जैसा मैने कहा कि श्रेष्ठ आदमी का जो पैमाना है, वह यह बात है कि वह दूसरों के लिये कितना जीता है, जितनी मात्रा में जीता है उतना ही श्रेष्ठ है।

आपने पांडवों की कथा पढ़ी होगी। अन्तिम यात्रा में पांडव जब निकले पहाड़, हिमालय की तरफ तो युधिष्ठर और उनके चार भाई और द्रौपदी, कुल मिला कर 6 लोग थे। लेकिन साथ में एक डॉग भी था। और वह कहानी बहुत प्रसिद्व हुई– Yudhishthar and his faithfull dog. जब वे यात्रा कर रहे थे तो धीरे–धीरे एक एक के बाद एक गिरते गये। उंचाई की यात्रा, हिमालय की यात्रा, हर एक थोड़े ही कर पाता है। सबसे पहले द्रौपदी गई, फिर नकुल गया, सहदेव गया, भीम गया, अर्जुन गया, और अंतिम पड़ाव जब आया तो सिर्फ युधिष्ठर थे और उनके साथ उनका वफादार डॉग, फेथफुल डॉग था। युधिष्ठर ने सामने देखा एक बहुत बड़ा कैरियर है, बहुत बड़ा विमान है, लेकर कोई आ रहा है स्वर्ग से। विमान आकर उनके पास रूका और उसमें बैठा जो सारथी था, जो पार्थ था, जो पायलट था उसने युधिष्ठर को कहा कि श्रीमान जी यह विमान आपके लिये आया है, आकर इसमें बैठिये।

अगर दुर्योधन की प्रवृति का होता तो क्या करता? वह तो बैठ जाता। हममें से भी कई गलती कर सकते हैं। दूसरों को बचाने में जो जान दे देते हैं, वे श्रेष्ठ हैं और अपने को बचाने के लिये जो दूसरों की जान ले लेते हैं उनको क्या कहा जा सकता है? यह भाव आयेगा कहां से? युधिष्ठिर ने उस विमान के सारथी को कहा कि मैं तो बैठ जाउंगा लेकिन मेरे डॉग का क्या होगा? What about this dog, faithful dog, who accompany me, right from the beginning. पायलट ने, सारथी ने कहा कि विमान आपके लिये है, आपके डॉग के लिये नहीं है। युधिष्ठर ने कहा कि अगर यह विमान मेरे लिये है और मेरे डॉग के लिये नहीं है, तो फिर मुझे यह विमान नहीं चाहिये। फिर यह विमान नहीं चाहिये।

यह तो युधिष्ठिर डॉग के लिये कह रहे हैं। जब युधिष्ठिर डॉग के लिये इतना सोच सकते हैं तो आदमी आदमी के लिये क्यों नहीं सोचता? जो सामर्थ्यवान है वह दूसरे भी समर्थ बनें, उसके लिये क्यों नहीं सोचता? यह कैसी संस्कृति है, यह कैसी मानवता है? इसलिए यह भाव सबसे बड़ा है। लेकिन जब युधिष्ठिर ने मना कर दिया कि मैं नहीं बैठूंगा, अगर बैठेगा तो सबसे पहले मेरा डॉग बैठेगा तो युधिष्ठिर की यह घोषणा सुनने के पश्चात बहुत चमत्कार हुआ।

युधिष्ठिर ने देखा विमान तो था लेकिन उसमें सारथी नहीं था। और युधिष्ठिर ने जब पीछे मुड़कर देखा तो डॉग नहीं था। डॉग के स्थान पर स्वयं धर्मराज खड़े थे। यह चमत्कार देखकर युधिष्ठिर ने पूछा– 'क्या हुआ'? उन्होंने कहा कि मैं तुम्हारी परीक्षा लेने आया हूँ कि वास्तव में तुम धर्मराज हो कि नहीं। वास्तव में तुम मानव हो कि नहीं। वास्तव में तुम इन्सान हो कि नहीं? यह मैं तुम्हारी परीक्षा लेने आया था। अगर आप आकर विमान में बैठ जाते तो परीक्षा में फेल हो जाते। आपका यह मानवमात्र के लिये ही नहीं, जानवर के लिये भी इतना बड़ा जो प्रेम है, यही तो आपकी श्रेष्ठता को प्रकट करता है। और इसलिये आप बैठिये। डॉग के रूप में धर्मराज आये थे। फिर धर्मराज को युधिष्ठर कहते हैं कि हमारे शेष भाईयों और द्रौपदी का क्या हुआ? तब उन्होंने कहा कि वे तो पहले से ही स्वर्ग में पहुंच गये हैं। यह पूरी कथा इस बात को बताती है कि मनुष्य का व्यवहार, मनुष्य की सोच, मनुष्य का चलन, मानवमात्र के लिये होना चाहिए।

इसलिये प्रारम्भ से लेकर अब तक जो कुछ मैने करूणा चैरिटेबल सोसायटी के बारे में सुना, देखा, अनुभव सुने, तो मुझे निश्चित रूप से लगा की पंचकुला की यह अलग पहचान है। जे0डी0 गुप्ता तो पढाई करके कहां तक पहुंच गये, चीफ सेक्रेटरी तक पहुंच गये। लेकिन उनके मन में जो भाव है कि वह सही इन्सानियत है, सही आत्मीयता है। और महात्मा गांधी इसी को सपोर्ट करते थे। जो कुछ आप कमाते हो वह आपका नहीं है, आप उनके ट्रस्टी हैं, आप उनके न्यासी हैं। वह आपका नहीं है। वह सम्पूर्ण समाज का है। आपका तो सिर्फ उतना ही है जितना आपके भरण–पोषण के लिए जरूरी है।

आपने अपनी सोसायटी के बारे में जो बताया उसको सुनकर भी बहुत अच्छा लगा, बहुत प्रसन्नता हुई। लेकिन एक परेशानी भी है। जो भी मैं यहां सुन रहा था तो मुझे अपनी पुरानी याद आ गई। क्योंकि मैं भी एक गावं का रहने वाला हूँ। मेरा जन्म एक गांव में हुआ। और मेरे परिवार के पास इतनी खेती नहीं थी कि मुझको पढा सके। लेकिन मैने मिडल बोर्ड में टॉप किया इसलिए स्कॉलरशिप मिला। हाई स्कूल में मैरिट में आया तो इसलिए स्कॉलरशिप मिला। लेकिन जब मैने intermediate पास किया तो उस समय intermediate कहलाताा था, +2 तो अब आया है। लेकिन +2 और intermediate बराबर ही होता है। Intermediate पास करने के पश्चात उस समय PET नहीं होता था, Engineering test नहीं होता था। Intermediate में जो आपको मार्कस मिलते थे उसके आधार पर Engineer college में admission मिलता था।

इसलिये जो मेरे मार्कस थे उसके आधार पर मेरा Engineering college में admission हो गया। लेकिन admission होने के बाद जब मैने घर पर जाकर कहा कि मेरा Engineering college में admission हुआ है, मैं Engineer बन जाउंगा चार साल बाद। तो घरवालों ने पूछा कि खर्चा कितना होगा। जब मैने खर्चा बताया तो उन्होंने कहा कि आपको नहीं पढा पायेंगे क्योंकि हमारे उपर कर्जा है और जमीन गिरवी रखी हुई है।

इसलिये मेरे जीवन की यह कथा है कि मैं Intermediate के बाद Engineering नहीं कर पाया, Engineering college नहीं जा पाया। Intermediate के बाद मैने नौकरी की अध्यापक की, टीचर की और टीचर की नौकरी करते–करते मैने प्राइवेट परीक्षायें पास कीं और सिर्फ एम.ए में जाकर रैगुलर हुआ। एम.ए पास करने के बाद बी.एड वगैरह भी किया। मैं कालेज में प्रोफेसर हो गया। मैं बैठा सोच रहा था कि अगर करूणा चैरिटेबल सोसायटी मुझे अगर मिल गई होती तो मैं भी इंजीनियर बन जाता। लेकिन भाग्य में जो लिखा होता है वह होता है। अगर मैं इंजीनियर बन गया होता तो एक Executive इंजीनियर बन जाता, चीफ इंजीनियर बना जाता और रिटायर हो कर बैठ जाता, गवर्नर नहीं होता। यह तो ईश्वर की कृपा है, जो करना है वह करता है।

लेकिन जब मैं यह सब सुन रहा था, जब उस बच्चे ने यहां आकर, जो टोयडा में मैनेजर है, जब उसने सारा वर्णन सुनाया कि उसने भी पंजाब इंजीनियर कालेज से इंजीनियर किया, लेकिन मैं तो नहीं कर पाया। और इसलिए मैने कहा कि थोड़ी परेशानी हुई मुझे। लेकिन प्रत्येक प्रतिभा को अवसर देना और अगर नहीं मिल रहा तो दिलाना ये ईश्वरीय कार्य है, it is Godly work. जो ये करते हैं, यह वे करते हैं जो ईश्वर करता है। इसलिए इस संस्था को मेरी बहुत–बहुत शुभकामनाएं। आप बहुत अच्छा कर रहे हैं, आगे करते रहिये। और मैं अपने कोष से इस सोसायटी को पांच लाख रूपये देने की घोषणा करता हूँ।

जयहिन्द!